कक्षा : चतुर्थ – जैन धर्म मध्यमा (परीक्षा 23 जुलाई, 2023)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- **15x1 = (15)**

(a) प्रतिक्रमण का संक्षिप्त पाठ है-
(क) इच्छामि ठामि (ख) आगमे तिविहे
(ग) करेमि भंते (घ) दर्शन सम्यक्त्व (क)

(b) ज्ञान के अतिचारों का पाठ है-
(क) इच्छामि णं भंते (ख) पाँचवाँ स्थूल
(ग) छोटी संलेखना (घ) आगमे तिविहे (घ)

(c) तीसरे आवश्यक में पाठ बोला जाता है-
(क) नमोत्थुणं (ख) इच्छामि खमासमणो
(ग) बड़ी संलेखना (घ) 99 अतिचार (ख)

(d) दसवाँ कर्मादान हैं-
(क) वणकम्मे (ख) केसवाणिज्जे
(ग) विसवाणिज्जे (घ) साडीकम्मे (ग)

(e) ग्यारहवाँ पाप स्थान है -
(क) क्रोध (ख) मृषावाद
(ग) द्वेष (घ) कलेह (ग)

(f) संसार में सच्चे शरण कितने हैं-
(क) 4 (ख) 6
(ग) 8 (घ) 10 (क)

(g) बारहवें अणुव्रत में साधु-साध्वियों को कितने प्रकार की वस्तुओं का शुद्ध दान देने का उल्लेख है -
(क) 10 (ख) 14
(ग) 12 (घ) 24 (ख)

(h) वस्तु के विशेष धर्म को जानना कहलाता है-
(क) ज्ञान (ख) दर्शन
(ग) चारित्र (घ) तप (क)

(i) मनुष्यायु का कारण नहीं है-
(क) प्रकृति से सरल (ख) प्रकृति से विनीत
(ग) दयावन्त (घ) अज्ञान तप (घ)

(j) पाँच उपयोग लेकर जाते हैं और 5 उपयोग ही लेकर निकलते हैं-
(क) पाँच स्थावर (ख) पाँच अनुत्तर विमान
(ग) तीन विकलेन्द्रिय (घ) तिर्यंच पंचेन्द्रिय (ख)

(k) राजा मेघरथ ने कबूतर की रक्षा के बदले बाज को क्या दिया-
(क) धन (ख) भूमि
(ग) आभूषण (घ) शरीर का माँस (घ)

(l) महारानी अचिरा ने गर्भधारण के समय कितने स्वप्न देखे-
(क) 10 (ख) 14
(ग) 8 (घ) 24 (ख)

(m) जगत का दास बनने का कारण नहीं है-
(क) क्रोध (ख) लोभ
(ग) पुण्य (घ) मद (ग)

(n) नवकारसी के पच्चक्खाण होते हैं-
(क) सूर्य उदय से (ख) सूर्य अस्त से
(ग) मध्यरात्रि से (घ) इच्छानुसार (क)

(o) भवन आदि की नींव खुदवानें में विराधना होती है-
(क) पृथ्वीकाय की (ख) अप्काय की
(ग) तेऊकाय की (घ) वायुकाय की (क)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में दीजिए :- **15x1=(15)**

(a) सुदेव, सुगुरु, सुधर्म रूप सम्यक्त्व, मोक्ष का मार्ग हैं। (हाँ)
(b) कर्मादान आचरण योग्य है, जानने योग्य नहीं। (नहीं)
(c) समकित के पाँच अतिचार होते हैं। (हाँ)
(d) तीसरे आवश्यक में एक इच्छामि खमासमणो दिया जाता है। (नहीं)
(e) सातवें व्रत में श्रावक 26 बोलों की मर्यादा करता है। (हाँ)
(f) अरिहन्त भगवान 35 अतिशय एवं 34 वाणी सहित विराजमान होते हैं। (नहीं)
(g) ज्ञान,दर्शन,चारित्र तथा तप के अतिचारों का चिन्तन करने के लिए प्रतिक्रमण करते हैं। (हाँ)
(h) नामकर्म की 93 प्रकृतियाँ होती हैं। (हाँ)
(i) दर्शनावरणीय कर्म आत्मा के अनन्त आत्म सामर्थ्य नामक गुण की घात करता है। (नहीं)
(j) विसंवाद रहितता से शुभ नामकर्म का बंध होता है। (हाँ)
(k) नारकी से आये हुए जीव में क्रोध और भय संज्ञा अधिक पायी है। (हाँ)
(l) भगवान शांतिनाथ के धर्म परिवार में 61,600 साध्वियाँ थीं। (हाँ)
(m) 'मेरे अन्तर भया प्रकाश' प्रार्थना के रचयिता अशोक मुनि थे। (नहीं)
(n) चारों ओर अन्धेरा है, एक सहारा तेरा है यह पंक्ति आओ भगवन आओ प्रार्थना की है। (हाँ)
(o) जो जीव सहित है, वह सचित है। (हाँ)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- **15x1=(15)**

(a)	प्रत्याख्यान	(क) नववाड सहित	छठा आवश्यक
(b)	मनुष्य	(ख) वायुकाय की विराधना	चौदह लाख
(c)	शुद्ध ब्रह्मचर्य पाले	(ग) चुकन्दर	नववाड सहित
(d)	खुले मुँह बोलना	(घ) आचार्यजी महाराज	वायुकाय की विराधना
(e)	जमीकन्द	(च) पौषध व्रत	चुकन्दर
(f)	नन्दी सूत्र	(छ) नो कषाय मोहनीय	मूल सूत्र
(g)	संवर का पाठ	(ज) भरणी नक्षत्र	स्थिरता प्रमाण
(h)	36 गुण	(झ) आचार्य श्रीहस्ती	आचार्यजी महाराज
(i)	शोक	(य) छठा आवश्यक	नो कषाय मोहनीय
(j)	केवलज्ञान	(र) स्थिरता प्रमाण	भरणी नक्षत्र
(k)	चारों प्रकार के आहार का त्याग	(ल) चौदह लाख	पौषध व्रत
(l)	पान, सुपारी	(व) मूल सूत्र	ताम्बूल
(m)	मिश्र मोहनीय	(क्ष) मनुष्य में उपयोग	दर्शन मोहनीय
(n)	गजेन्द्र	(त्र) ताम्बूल	आचार्य श्रीहस्ती
(o)	78	(ज्ञ) दर्शन मोहनीय	मनुष्य में उपयोग

प्र.4 मुझे पहचानो :- **15x1=(15)**

(a) मैं सम्यक्त्व ग्रहण करने का पाठ हूँ। दर्शन सम्यक्त्व का पाठ
(b) भण्ड-कुचेष्टा मेरा एक अतिचार है। आठवाँ अर्थदण्ड विमरण व्रत
(c) अन्तिम समय में जो तप किया जाता है, उसे कहते है। संलेखना
(d) मेरा आठवाँ गुण अशोक वृक्ष है। अरिहंत भगवान
(e) हम जिन नहीं, पण जिन सरीखे, केवली नहीं, पण केवली सरीखे हैं। उपाध्याय जी महाराज
(f) मुझमें शीतलता व आर्द्रता में जल्दी जीवोत्पत्ति की संभावना रहती है। अचित्त पानी
(g) हम सचित के त्यागी, वैरागी, महागुणी, गुणों के अनुरागी, सौभागी हैं। आचार्य जी महाराज
(h) मेरे क्षय से अनन्त ज्ञान गुण प्रकट होता है। ज्ञानावरणीय कर्म
(i) मैं कषाय का वह भेद हूँ, जिसकी स्थिति चार माह है। प्रत्याख्यानावरण कषाय
(j) मेरा बंध सोलह प्रकार से होता है तथा सोलह प्रकार से ही भागा जाता हूँ। गोत्र कर्म
(k) मुझमें श्रावक के तीन मनोरथ का वर्णन किया गया है। स्थानांग सूत्र
(l) मेरा पूर्व भव राजा मेघरथ का था। भगवान शांतिनाथ

(m) किसे अपनाकर मैने स्वत्व का नाश कर लिया। पुद्गल
(n) मेरे पच्चक्खाण में तीनों या चारों प्रकार के आहार का त्याग होता है। उपवास (उभत्तट्ठ सूत्र)
(o) मेरे खाने से प्रायः स्वाद-लोलुपता बढ़ती है। जमीकन्द

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में उत्तर दीजिए- 8x2=(16)

(a) कर्मादान किसे कहते हैं?
उ. अधिक हिंसा वाले धन्धों से आजीविका चलाना कर्मादान है अथवा जिन संसाधनों से कर्मों का निरन्तर बन्ध होता हो, उन्हें कर्मादान कहते हैं।

(b) समकित के अन्तिम दो अतिचार लिखिए।
उ. 1. पर पाखंड़ी की प्रशंसा की हो। 2. पर पाखंड़ी का परिचय किया हो।

(c) उपाध्यायजी महाराज के 25 गुण संक्षेप में लिखिए।
उ. 11 अंग, 12 उपांग, चरण सत्तरी, करण सत्तरी। ये 25 गुण सहित है।

(d) अन्तराय कर्म किसे कहते हैं ?
उ. जिससे दान, लाभ, भोग, उपभोग और वीर्य (शक्ति) में बाधा उत्पन्न होवें, उसे अन्तराय कर्म कहते हैं।

(e) उच्च गोत्र बंधने के आठ कारण लिखिए।
उ. 1. जाति, 2. कुल (पितृपक्ष), 3. बल, 4. रूप, 5. तप, 6. श्रुत, 7. लाभ, 8. ऐश्वर्य मद नहीं करने से।

(f) भगवान शांतिनाथ का नाम शांतिनाथ क्यों रखा गया?
उ. माता अचिरादेवी के गर्भ में जैसे ही प्रभु का आगमन हुआ, महामारी का प्रकोप शान्त हो गया, अतः नामकरण संस्कार के समय आपका नाम शांतिनाथ रखा गया।

(g) '' ममता.....विश्वास,''। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए?
उ. ममता से संताप उठाया, आज हुआ विश्वास।

(h) प्रत्येक वनस्पति किसे कहते हैं ?
उ. प्रत्येक वनस्पति वह है जिसमें एक औदारिक शरीर में एक ही जीव हो।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 8x3=(24)

(a) छठे आवश्यक की विधि लिखिए।
उ. समुच्चय पच्चक्खाण का पाठ, प्रतिक्रमण का अन्तिम पाठ, नमोत्थुणं दो बार, सामूहिक वन्दना। सभी स्वधर्मी को खमायें और चौबीसी भजन गायें।

(b) पाँचवें पद के 27 गुण क्रम से लिखिए।
उ. पाँच महाव्रत पाले, पाँच इन्द्रिय जीते, चार कषाय टाले, भाव सच्चे, करण सच्चे, जोग सच्चे, क्षमावंत, वैराग्यवंत, मन समाधारणया, वय समाधारणया, काय समाधारणया, नाण सम्पन्ना, दंसण सम्पन्ना, चारित्त सम्पन्ना, वेदनीय समाअहिया सन्निया, मारणंतिय समाअहिया सन्निया, ये सत्ताईस गुण सहित है।

(c) आठवें अनर्थदण्ड-विरमण व्रत के आठ आगार लिखिए।

उ. आए वा, राए वा, नाए वा, परिवारे वा, देवे वा, नागे वा, जक्खे वा, भूए वा।

(d) आगमे तिविहे पाठ का क्या प्रयोजन है?

उ. यह ज्ञान के अतिचारों का पाठ है, आगम या शास्त्र के पठन-पाठन में लगे अतिचारों जैसें पाठ के क्रम का आगे-पीछे होना, हीन अक्षर, अधिक अक्षर, विनय रहित आदि 14 अतिचारों की आलोचना की जाती है।

(e) मोहनीय कर्म किन कारणों से बंधता हैं?

उ. मोहनीय कर्म 6 कारणों से बंधता है- 1. तीव्र क्रोध करने से, 2. तीव्र मान करने से, 3. तीव्र माया करने से, 4. तीव्र लोभ करने से, 5. तीव्र दर्शन मोहनीय से, 6. तीव्र चारित्र मोहनीय से।

(f) श्रावक का दूसरा मनोरथ लिखिए।

उ. वह दिवस धन्य होगा जब मैं संसार की मोह-माया और विषय-वासना का त्याग करके साधु जीवन स्वीकार करूँगा।

(g) भगवान शांतिनाथ की जीवनी से मिलने वाली तीन शिक्षाएँ लिखिए।

उ. नोटः इनमें से कोई तीन मान्य-

1. अहिंसा एवं परोपकार के कार्यों को प्राथमिकता देनी चाहिये।
2. उदारता गुण को बढ़ाने हेतु एक-दूसरे का सहयोगी बनना चाहिये।
3. परीक्षा एवं प्रतिकूलता की घड़ियों में भी अपनी प्रतिज्ञा को दृढ़ता से पूर्ण करना चाहिये।
4. करूणाभाव को बढ़ाने हेतु क्रियात्मक सेवा को अपनाना चाहिये।

(h) '' निज.....अभेद मिले''। रिक्त स्थान की पूर्ति कीजिए।

उ. '' निज को इतना भूल गया, बिल्कुल ही बना धूल गया,
आसमान का तारा हूँ, इस धरती से न्यारा हूँ।
इस जग से विच्छेद मिले, तेरा मुझे अभेद मिले।।''